**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 22-04-2020; Accepted: 29-04-2020; Published: 07-05-2020**
**www.hindijournal.com**
**Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 05-06**

# प्रेमचंद–पूर्व हिन्दी उपन्यासकार भुवनेश्वर मिश्र और 'घराऊ घटना'

**राजेश कुमार चन्देल**
हिन्दी विभाग, राज इंटर कॉलेज, बेतिया, प.चम्पारण, बिहार, भारत

## प्रस्तावना

भुवनेश्वर मिश्र, हिन्दी उपन्यास के यथार्थवादी धारा के प्रमुख उपन्यासकार हैं। पूर्व–प्रेमचंद युग में जब घटना प्रधान उपन्यासों का बाहुल्य था। तिलस्मी, जासूसी और ऐयारी उपन्यास की धूम थी। ऐसे समय में उन्नीसवीं सदी के अंत में भुवनेश्वर मिश्र के रूप में एक ऐसे रचनाकार का प्रार्दुभाव हुआ, जो कल्पनारत एवं मनोरंजक उपन्यास लेखन की दिशा को सच की ओर मोड़ने का कार्य किया। भुवनेश्वर मिश्र ने दो ही पूर्ण उपन्यास लिखें। 'घराऊ घटना'(1893) और 'बलवंत भुमिहार'(1901)। लेकिन इन उपन्यासों में उनका यथार्थबोध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'घराऊ घटना'(1893) में घरेलु यथार्थ की जो प्रमाणिक प्रस्तुति है, वह अपने समकालीन उपन्यासों के संदर्भ में आश्चर्य पैदा करती है।

भुवनेश्वर मिश्र का जन्म 1867 ई. में बिहार राज्य के दरभंगा जिला में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. अजीत मिश्र था। 1888 ई. में इन्होने आई.ए. की परीक्षा पास की और उसके बाद मुजफ्फरपुर स्थित तत्कालीन सोसाइटी हाई स्कूल(वर्तमान लंगट सिंह कॉलेज) में शिक्षक के पद पर कार्य किया। सन् 1890 में बेतिया से प्रकाशित 'चंपारण चन्द्रिका' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। इस पत्रिका ने अयोध्या प्रसाद खत्री द्वारा संचालित खड़ी बोली पद्य आंदोलन का सक्रिय समर्थन भी किया। बेतिया के बाद वे 'हिन्दी बंगवासी' नामक साप्ताहिक पत्र के संपादक के रूप में कलकता चले गये। कलकता प्रवास के दौरान ही उन्होंने वहाँ रिपन कॉलेज से कानून की परीक्षा पास की। सन् 1903 ई. से दरभंगा में वकालत की शुरूवात की और आजीवन वे इस पेशा से निष्ठापूर्वक जुड़े रहे। वे पटना से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'सर्चलाइट' के निदेशक भी रहे। भुवनेश्वर मिश्र ने अनेक पुस्तकों की रचना की थी, जिसमें 'घराऊ घटना' और 'बलवंत भूमिहार' नामक यथार्थवादी उपन्यासों के अतिरिक्त 'कवि–परिचय','कवि–सोपान','परलोक' आदि प्रमुख हैं। अपने तीखे यथार्थ के कारण उन्हे व्यक्तिगत कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ा। अंततः साहित्य साधना में लीन भुवनेश्वर मिश्र की मृत्यु 67 वर्ष की आयु में ह्रदयघात से हो गयी। इनके दोनों उपन्यासों के प्रकाश में लाने का कार्य डॉ. रामनिरंजन परिमलेंदु जी ने किया।

दरअसल, जब कोई चिंतक, अपनी चिंता के केन्द्र में समाज की गतिविधियों को रखता है, तो उसकी दृष्टि अनायास उस व्यवहारिक जीवन पद्धति की तरफ चली जाती है, जिससे समाज का संचालन होता है। यहाँ पर वह पाता है कि जीवन के प्रति आदर्शपरक दृष्टिकोण, सामाजिक व्यवस्था और व्यवहारिकता के बीच एक गहरी खाई है। व्यवहार और आर्दश के बीच का यही अंतर्विरोध रचनाकार के भीतर बेचैनी पैदा करता है, और यही बेचैनी उसकी रचना दृष्टि को यथार्थ की ओर ले कर जाती है। यथार्थ के उद्घाटन का अर्थ व्यक्ति या मनुष्य के उस सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत पहचान को रेखांकित करने से है, जिसे वह सतह पर जीता है। हमारे लिए यथार्थ की अवधारणा कोई नयी नहीं हैं। हमारे धर्म, दर्शन और साहित्य में इसकी भरपूर उपस्थिति है।

हिन्दी साहित्य, खासकर हिन्दी उपन्यास साहित्य की बात की जाय तो आज हिन्दी उपन्यास लेखन का आधार ही यथार्थ बन गया है। आज लेखन के सामाजिक सरोकार की वजह से हर उपन्यास को यथार्थ की कसौटी पर कसा जा रहा है। डा. त्रिभुवन सिंह के अनुसार–''जो साहित्य–साहित्यकार मानव जीवन एवं समाज का संपूर्ण वास्तविक चित्र उपस्थित करता है और अपने साहित्य का वस्तु–विषय काल्पनिक संसार से न लेकर वास्तविक संसार से लेता है, उसे ही हम यथार्थवादी लेखक कह सकते हैं। यथार्थवादी लेखक अपनी कल्पना और प्रतिभा के बल पर बाह्य पदार्थों का यथा–तथ्य चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है, अथवा भौतिक तत्वों का चित्रण करते समय अपनी भावुकता तथा अपनी अनुभूतियों को बाधक होने नहीं देता।''[1] यथार्थ से ही साहित्य की प्रमाणिकता सिद्ध होती है और यह आम आदमी से अपना सहज संवाद स्थापित कर पाता है। लेकिन हिन्दी उपन्यास के आरंभिक दौर में ऐसी स्थिति नहीं थी। अपने प्रारंभ में हिन्दी उपन्यास का उद्देश्य कल्पना और इतिहास की पृष्ठभूमि पर रोमांचकारी, तिलस्मी और जासूसी उपन्यासों के माध्यम से मनोरंजन करना था। नवजागरण, धर्म सुधार आंदोलन और स्वतंत्रता आन्दोलन की सुगबुगाहट के फलस्वरूप कुछ सुधारात्मक उपन्यास की भी रचना की गयी लेकिन तिलस्मी, ऐयारी और जासूसी उपन्यास सबसे अधिक लिखे गये। देवकीनन्दन खत्री की 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता संतति' ने हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में तो कीर्तिमान ही कायम कर दिया। ऐसे समय में औसत व्यक्ति के जीवन को भुवनेश्वर मिश्र ने 'घराऊ घटना' में दिखाने का साहस किया।

भुवनेश्वर मिश्र का उपन्यास 'घराऊ घटना' पारिवारिक जीवन की कथा है। आत्मकथात्मक शैली में लिखे गये इस उपन्यास का कथा नायक स्वंय लेखक है। इस उपन्यास में धर्म, जीवन शैली, रीति–रिवाज और दाम्पत्य जीवन के सामान्य प्रसंगों को काफी तल्लीनता से उभरा गया है। दरअसल यथार्थ और वास्तविकता सबसे स्पष्ट रूप में घरेलु जीवन में ही दिखाई देता है। 'बलवंत भूमिहार' और 'घराऊ घटना' को एक साथ संकलित करा कर प्रस्तुत करने वाले डॉ. रामनिरंजन परिमलेन्दु के अनुसार '' हिन्दी में उन्नीसवीं शती के उपन्यासों में 1893 ई. में प्रकाशित 'घराऊ घटना' सर्वाधिक मौलिक उपन्यासों में से एक है। भुवनेश्वर मिश्र के उपन्यासों की अकाट्य मौलिकता बहुत महत्वपूर्ण है। अपने युग या उन्नीसवीं शताब्दी के उपन्यासों से बिलकुल अलग हटकर, आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया, यह उपन्यास 'घराऊ घटना' पारिवारिक अनुभवों से समृद्ध है। इसका घरेलुपन ही उपन्यास साहित्य की विशेषता है। कथा–विकास के क्रम में परिवार और समाज की अनेक समस्याओं, रूढ़ियों आदि का चित्रण ईमानदारी के साथ लेखक करता रहा है। जैसे–बाल–विवाह की झाँकी, घर की बड़ी–बूढ़ी महिलाओं की पुत्र वधू की लालसा, विवाह के बाद द्विरागमन में वर्षों का विलम्ब, परिणय

पूर्व वधु दर्शन का परम्परागत निषेध का अच्छा चित्रण यहाँ हुआ है।''[2]

दरअसल व्यवहारिक जीवन में परिस्थितियों का संचालन कभी भी कल्पना और आदर्शवादी संस्कारों से नहीं होता है। मूल्य और आदर्श, मनुष्य के जीवन यात्रा को आसान जरूर बनाते हैं लेकिन इसको संचालित करने के लिए व्यवहारिकता और यथार्थ के धरातल पर उतरना ही होता है। चूँकि भुवनेश्वर मिश्र नें सामान्य पारिवारिक अनुभवों को अपने उपन्यास का विषय–वस्तु बनाया इसलिए 'घराऊ घटना' में सभी जगहों पर घरेलु यथार्थ का दिखाई देना ही इस उपन्यास को प्रमाणिक और स्तरीय बनाता है। घरेलु यथार्थवाद का परिमार्जित एवं विस्तृत रूप हिन्दी उपन्यास साहित्य में पहली बार 'धराऊ घटना' में हीं दिखाई देता है। है। भाषायी संस्कार के दायरे में दाम्पत्य जीवन की चुनौतियों, आय दिन की परेशानियों को इस उपन्यास से जो स्वर मिला है, वह देखने लायक है। साली के बहनोई के घर आने का प्रसंग–'' सुनते ही मेरा होश उड़ गया। अकेली इस बोली की खुशबु से मेरी सब दशा हो रही थी, अब इसकी छोटी बहन चंपा भी पहुँचेगी। भगवान ही रक्षा करे। तौ भी मुझे हँसते–हँसते कहना पड़ा कि 'वह कब आवेगी'।''[3] पत्नी बोली–'' आपको कुछ खर्च न पड़ेगा कि इतना घबड़ा रहे हैं। वह कल आवेगी, परसों गंगा स्नान कर के चली जाएगी। आपसे कुछ नहीं लेगी। इतना सुनते ही मैं अपना कलेजा ब्रज के समान करके और बड़ी कोशिश से मुँह पर ला के यह कहता–कहता बाहर चला आया कि आ के रह जाए तो मुझे भी फायदा हो।''[4] पति–पत्नी के बीच के दामपत्य जीवन का यह विनोद कितना मधुर है, इसे सहज समझा जा सकता है। डॉ. गोपाल राय इस उपन्यास के महत्व को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि ''घराऊ घटना अपने समय की विशिष्ट कृति है।यह हिन्दी का पहला उपन्यास है जिसमें मध्य वर्ग के सामान्य गृहस्थ के दैनिक जीवन का,उसके सूक्ष्म ब्योरों के साथ, विश्वसनीय चित्रण किया गया है। यह पहला हिन्दी उपन्यास है जिसमें आंचलिकता का इतना गाढ़ा रंग है। तत्कालीन समाज के रीति–रिवाजों और मान्यताओं का जैसा विश्वासोत्पादक वर्णन इस उपन्यास में उपलब्ध है, वह पूर्ववर्ती और समसामयिक उपन्यासों में दुर्लभ है। इस दृष्टि से यह हिन्दी का पहला 'रीति–रिवाजों का उपन्यास'(नॉवेल ऑफ मैनर्स) कहा जा सकता है।''[5] सामान्य समाज का रीति–रिवाज भी साहित्य में जगह ले सकता है, उसकी उपादेयता हो सकती है, इसको सबसे पहले उजागर करने का काम भुवनेश्वर मिश्र ने किया। भुवनेश्वर मिश्र के दोनों उपन्यासों के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नगेन्द्र का कथन –''उस काल के केवल एक उपन्यासकार भुवनेश्वर मिश्र की रचना दृष्टि अपने समकालीनों से भिन्न थी। मनोरंजन और प्रचार से उपर उठकर उन्होनें उपन्यास को जीवन के अभिव्यक्ति के साधन के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। 'घराऊ घटना'(1893) और 'बलवंत भूमिहार(1901) ऐसी ही कृतियाँ थी।''[6]

समग्रता में, 'घराऊ घटना' में यथार्थ का घरेलु स्तर पर होना ही इस उपन्यास और उपन्यासकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है। पूर्व प्रेमचंद युग में जब घटना प्रधान उपन्यासों का बाहुल्य था। तिलस्मी, जासूसी और ऐयारी उपन्यास की धूम थी। ऐसे समय में भुवनेश्वर मिश्र ने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के सभी पक्षों को, उसके उसी रूप में, 'घराऊ घटना' में स्थान देकर, समकालीन औपन्यासिक धारा को एक नयी दिशा और अर्थवता प्रदान की। उपन्यास के क्षेत्र में, प्रेमचंद के आगमन ने उनकी दृष्टि को और संतुलित कर उसे विस्तार देने का काम किया। आज हिन्दी उपन्यास सभी प्रकार के दृष्टिकोणों को अपने में समाहित कर भविष्य की ओर निरंतर अग्रसर हो रहा है तो उसमें भुवनेश्वर मिश्र का योगदान अविस्मरणीय है।

**संदर्भ ग्रंथ**


1. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद–त्रिभुवन सिंह, पृ0सं0–7
2. बलवंत भूमिहार/घराऊ घटना,भुवनेश्वर मिश्र, प्राक्कथन–डॉ. रामनरिंजन परिमलेंदु,पृ0सं0–8,प्रथम संस्करण–2005
3. बलवंत भूमिहार/घराऊ घटना,भुवनेश्वर मिश्र, प्रस्तुति–डॉ. रामनरिंजन परिमलेंदु, अध्याय –2 पृ0सं0–181 प्रथम संस्करण–2005
4. उपरिवत् , अध्याय–2, पृ0सं0–182
5. हिन्दी उपन्यास का इतिहास–डॉ. गोपाल राय, पृ0सं0–109,प्रथम संस्करण–2002
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र, पृ0सं0–573, तीसवॉ संस्करण–2004